प्रतिशोध्य

"समय हो गया है, ~~अब~~ अब चलें" लता की यह बात सुनकर सारी महिलायें दंग रह गयी। उनमें से एक महिला उठ कर बोली "क्या ? तू किस समय की बात कर रही है ?"

"अब हम औरतें मरदों की बराबरी करने चलें"। यह सुनकर वह कुछ न बोली।

मध्य प्रदेश में रहने वाली लता एक विवाहिक जीवन जी रही थी। उसका एक स्वभाव था है कि जहाँ वह गलत बात देखती, सुनती, या महसूस करती वहाँ उसके मन में प्रतिशोध्य जाग उठता। वहाँ महिलायें हर हफ्ते के शनिवार को एक साथ इकट्ठा होती और बातें करती, चर्चा करती।

उस दिन रात को सोते समय वह विचारों में डूब जाती। लता उस महिला की बातें सोचती जो उसने संघ में कही थी। लता सोचती कि 'क्यों हम इन मरदों से पीछे और मर्द हमसे आगे है? हम औरतों में क्या कमी है। उस महिला ने ऐसा क्यों कहा की हम

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

Item Code: 642 Participant Code: 102

उन मर्दों की बराबरी नहीं कर सकते।
अगली सुबह जब वह उठी तो उसे देर हो गयी, इसी कारण उसके सारे कामों में देरी हो गयी। उसकी सास है कि बहुत खडूस, उसे ताने मारने में एक कसर न छोड़ती। सास ने लता को ताना मारना शुरू कर दिया। लता परेशान होने लगी। सासुमा के ताने सुनकर, लता बड़बड़ाती "एक तो काम से फुर्सत नहीं और अब सास के ताने भी सुनो। कैसा विचार है इनका कि बहू चाहिए तो सारा काम करने वाली चाहिए और जब बेटी की शादी करवानी हो तो उसे रानी जैसे रखने वाला ससुराल चाहिए।" लता अपने ससुराल से परेशान हो चुकी थी। उसका पति अभी तक नहीं उठा, जबकी नौ बजने को आए है। जब लता ने पति को उठाने की बात की तो सासुमा भड़कने लगी की "बैचारे को आज ही छुट्टी मीली है, सोने देना उसको पूरा हफ्ता सुबह से शाम तक काम करके आता है तो नींद पूरी नही हुई होगी।" "उसे आराम से सोते देख तुझे क्या परेशानी है।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

यह सुनकर उसे थोड़ा दुःख सा महसूस हुआ और वह उदास हो गयी। एक दिन लता ने अपनी नौकरी की बात परिवार के सामने प्रकट की तो सास ने कहाँ

"क्या? तेरी नौकरी? तू तो छोरी है।

"तो क्या? मैं नौकरी कर सकती हूँ" लता ने कहा।

"हमारे खाँदान में छोरियाँ नौकरी नहीं करती।" और तू भी समझले की तू नौकरी नहीं करगी। बेटा कर रहा हैना वह काफी है।" यह सुनकर वह खामोश हो गयी और अपने कमरे में चली गयी।

उस रात जब लता ने अपनी विचार किया कि अब तो समय आ गया है।

जब अगला शनिवार आया तो लता बोली "देखों सबके पास परे शानियाँ है, किसी को नौकरी करनी है तो, किसी को सासों से शहस। मुझे भी सबका अनुभव है।" लता ने अपना अनुभव सबके सामने प्रकट किया। बाद में पुछा "क्या आपके साथ भी यह

सब हुआ है ?"
"हाँ।" सबने ज़ोर से कहा।
सबके साथ जब यह हुआ तो सबको अच्छा लगा
था क्या ? लता ने फिर से पुच्छा।
"नहीं" सबने कहाँ।
फिर ममता ने कहा कि उलटा मुझे तो बुरा लगा
जब वैसा हुआ, और मन हि मन, मैं तो
विद्रोह करने लगी थी।"
"देखा अब तो सब मान जाओ कि बराबरी
ज़रूरी है।" लता ने सबसे बिनती करते हुए
कहा।
वह औरत जिसने लता का विद्रोह ~~करते हुए~~
किया वह फिर से उठकर बोला की "बराबरी"।
लता उसको टोककर बोली "क्या तुम्हे यह महसूस
नही होता?"
उसने कहाँ "कभी-कभी होता है। लेकिन...।"
लता बोली "वाह! तुम यह सब जानते हुए भी
यह कह रही हो? जब मर्द नौकरी करें तो
वाह-वाह होगी और जब बहू नौकरी करेगी तो

खानदान की नाक कट जाएगी और मुँह दिखाने के लायक नही रहेंगे। बेटा पढ़ सकता है क्योंकि वह बड़ा होकर कामयाब बनेगा और लड़की पढ़कर क्या करेगी। क्यों ये मर्द हम औरतों से आगे और क्यो औरतें पीछे? जबकि औरत और मर्द बराबर है।"

लता के यह वचन सुनकर सारे दंग रह गए। शाँती छा गयी और माहोल बदला-बदला सा महसूस हुआ। तब लता समझ गयी की उसकी बातों का असर सबपर हो रहा है। उसने कहा "अब समय हो गया है, हम चलें सबने मिलकर एक रूप-रेखा तैयार की कि कैसे बराबरी हासिल करनी है।

अगले दिन लता देर से उठी, काम किये बिना वह एक जगह पर बैठ गयी। यह देख उसकी सास ताने मारना शुरू करती है कि "कहाँ से ले आयी इस मनहूस को, काम की ना काज की दुश्मन अनाज की। मेरे लिए आफत बन गयी है, रत्ती भर भी काम नही कर सकती। लता के कहने से उसके पती ने अपना काम

छोड़ दिया। लेकिन दोनों ने यह बात राज रखी की कम लता के कहने से छोड़ा है, उन दोनों ने सिर्फ यह कहा की नौकरी चली गयी है। यह सुनकर सास और ससुर चिंतित रहने लगे। घर की स्त्री खराब होने लगी तब लता कहती है

"मैं नौकरी करूँ?" यह सुनकर सास खामोश हो जाती है और कहती है कि "अब हमें समझ आ गया है बहू कि बेटा और बेटी एक समान होते है। क्योंकि जब मर्द और औरत एक साथ चलते है तभी घर आगे बढ़ता है। दोनों बराबर होते है।"

ससुर कहता है बहू "आज से तु हमारी बेटी समान है।"

यह सब सुनकर लता खुश हो जाती है और सास और ससुर के पाँव छूती है। फिर वह अपने बराबरी से चलने वाले नए जीवन की शुरुआत करती है।

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 642 Participant Code: 102

मन में ठान लेती है कि ~~अब~~ समय हो गया है, अब चलो। अगर आज शुरुआत नहीं की तो ~~शायद~~ शायद कभी नहीं कर पाएँगे। वह नौकरी करना शुरु कर देती है और बराबर साथ देकर चलती है। अब से उसे अधिकार मिल गया है कि जो बेटा कर सकता है वह बेटी भी कर सकती है। गाँव की सारी नारीयों को भी यह अधिकार मिल गया था। उनके जीवन का समय चक्र भी उनके समय को बता रहा था कि अब वे सब कर सकती है।

उस के अगले शनिवार को औरतों के संग में सब जब इकट्ठा हुई तो सबके चेहरे मे एक खुशी झलक रही थी। "औरत और मर्द बराबर है, एक समान है" उनका यह प्रस्ताव सही निकला और उनकी रूप-रेखा भी सफल हुई। लता का पूरा परिवार खुशी से रहने लगा।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)